

DPN 6261

Title : वैष्णवाग्नि यज्ञ विधि VAISNAVĀGNI YAGNA VIDHI

Run. No. 6952

Cat. No. 62

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 11

Folios 5

Lines (in a page) 9

☒ Compl. / ☐ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Rajendra shreshtha

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / ☒ paper / ☐ thyasaphu / ☒ yellow

Condition : ☒ fine / ☐ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अर्घ्यपात्रं समादाय, आचार्येण कृत्वा ब्रह्मणा-
दिन्तमिव ॥

P.T. O

△ अस्त्र मन्त्रेणा विसर्जनं ॥ अभिषेक चन्दनादि. आशुर्विदि ॥ यज्ञ
विसर्जनं ॥ इति वैष्णवाग्नि यज्ञ विधिः समाप्तः ॥ ॥ शुभं ॥
ॐ ॐ ॐ विष्णुः प्रीणानु ॥

10

5

0

5

10

15

20

25

30



کتاب

[illegible]

[illegible]

सर्वकर्मणि तदुक्तं
न को धर्मोपादया
मिहा ॥ श्रीमदनीषा

५१

१ स्वाहा ३

खान १ खान ३

3

३ स्वादा१
स्वादा४

स्वादा २

४ वादा ३

[illegible]

वक्रगदादिर्न। कठुमश्चिर्नश्च। यद्दयार्कसमपरं॥ ननामानवसमयश्च विसर्गयत्न॥ दद
यमर्कलस्वाश्लीयन॥ ॥ अष्टदशसमिधमादाय॥ मूलमर्कलधातुसमिधं रुद्रयाने॥ नर्क
उकात्रं रुद्रानि॥ नर्कपीनानिपुनीन॥ तिस्रवृत्तकृत्तवृत्तकृत्तस्युत्त॥ ॥ उं रुद्राष्टादश॥ ॥
त्यभं नष्टगदुर्निदत्ता॥ वामरुक्मं वद्धां त्वययमनकृत्तं पूजनेव॥ ॥ ननाविष्कृतवर्षवित्त
वक्रापुनीनोदो वक्रागद्वनविष्कृतननाश्चन्द्रादिलाकयालाः संपूय॥ उरुत्रं पुनीनं॥ नभादवं
त्यः॥ दक्षिणं वक्रास्वधापित्त्यः॥ उयस्यर्गर्नकात्रयत्न॥ ॥ ननाचुतादुर्नि॥ स्वस्वमर्कलपूवस्व
नः॥ स्वादाने॥ त्यागयूक्तं रुद्रयान्॥ संप्रवृत्तपार्तुपुनीनं निधाय॥ ॥ यन्मनिलादुर्नि॥ वीरिया
रुद्रपर्वणमर्कलस्युत्त॥ यवतिलाकृतानि॥ तिस्रधूनि॥ वाग्निरुद्राद्यामालासमिधस्येपार्तुस्ति
त्वारुत्तं॥ नृसिंहमर्कलजयत्न॥ यथा यरुस्यनिलादुर्निमर्ककविष्कृतं॥ वा अर्कं वंति कृत्वा॥ गलय

। पंचगव्यसंमिश्रं २।

निष्कर्षात्पुगीतवृत्ताङ्गकवविष्णुअनकलाकपालादिदिग्वावस्तु कलगस्तु ४स्तुलिलस्तु दय ४प
विवादा ४॥ स्वस्वमनुं गपुतिः पंवाङ्गुनिं रूद्रयात् ॥ नर ४पुष्पं रूद्रिवा ॥ ॥ नराविगेषकर्म ॥ ॥
नरादग्नपातन ॥ वाङ्मलपुङ्गुनंदकिष्णयानी ॥ मूलमनुं गपुतिः कालिगत्तमक्षरुर्न रूद्रयात् ॥
योष्टिकाङ्गुनिं वत नमनुं ॥ ॥ यरूवासिस्तान वासिधवांस्वस्वमनुं गपुथकरुद्रयात् ॥ पुष्पं रू
निंस्वस्वमनुं ॥ मरावलिपुदानी ॥ अक्षरुवगत्तद्युतदीपवृत्तिकाक्षमं रूद्रयात् ॥ अक्षरुवगत्तद्युत
रूत्तिमक्षरुवगत्तं ॥ यवधाय्यादि ॥ ॥ दृत्तस्य कार्षिकाक्षाम ४क्षीयस्य वविगेषत ४गुक्तिपा
गङ्गुनिर्दध्ने ४पुष्टिः पायसस्य ॥ गुप्ता रूद्रमागुर्मनानी रुलानी सपमानन ४सर्वेषामवबीजा
नी मूष्टिदाम ४समाववत् ॥ अरुत्तुल्यगेषलाजानी सालीनाम्य ४कस्तथा रुलानी स्वपुमागुं ४प
नवानां तथेव ॥ त्रिगुणैस्व ४मूलानी पुष्पाङ्गं स्वपुमानेन ४कर्कन्धमागुगुटिकाक्षामया ४

मुनूः सदा ॥ धारी रुलपुमा लवा. मरुव सगिता वद ॥ इव कं जिनि विषु नु. वरु वरु मरुली निवा ॥ स
 मित्या दं मा नन. सम कं दा स्व ग नि ना ॥ वलि वि स र्ज न ॥ (ग व द म ४। ह त्या दि ॥ स ग व पा स न
 व ॥ य वि श द क ना त्मा न सि र्ज न ॥ अ म्भ ग य वि रु मा व न ॥ शु वा र्था दृ न पू र्ण न पू र्ण कृ था न ॥ पू र्ण
 क व न न पू र्ण ता म्बू ला दि कं रू रू या न ॥ व दी स व ग कृ ग उ य य म न कृ ग य वि धी नि. अ म्भ म र्जु ग वि
 स र्ज रू रू या न ॥ आ र्ज र्ज व य ॥ ० न ॥ ॥ स र्ज ॥ उं ॥ नु या ला क या ला द ग दि गि व सि ना ४ ग म्भ म्भ
 स यू का. आ दि त्या दि गु ला र्ज व स गि रु वि गुरु य म द वी स रू यी ॥ ति थ्वा या ग म्भ म्भ द ग ग गु व द का
 कृ ति ल मा नृ का म्भ. ग नि र्ज ॥ या द द ना रू व रु व स म नी य रू य पू र्ण गु रा नि ॥ कृ ति ल क ल ग व रु म
 स ति ॥ अ म्भ म र्जु ग वि स र्ज न ॥ अ रि थ क व न ना दि. आ गी र्वा द ॥ य रू वि स र्ज न ॥ ॥ नि वे रू वा गि
 य रू वि धि ४ स मा क ४ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ गी गी गी वि रू ४ पी ग रू ॥

ॐ
 ॐ

ॐ

॥ ३ ॥